जागो फिर एक बार:-निराला,

बी०ए०पार्ट-१(हिंदी रचना)-

डॉ०मनोज कुमार सिंह,

सह-आचार्य, हिंदी विभाग, राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

सिंहों की गोद से छीनता रे शिशु कौन

मौन भी क्या रहती वह रहते प्राण?

रे अनजान

एक मेषमाता ही रहती है निर्मिमेष

दुर्बल वह

छिनती सन्तान जब

जन्म पर अपने अभिशप्त

तप्त आँसू बहाती है;

किन्तु क्या

योग्य जन जीता है

पश्चिम की उक्ति नहीं

गीता है गीता है

स्मरण करो बार-बार

जागो फिर एक बार

प्रसंग:-प्रस्तुत काव्यांश सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता जागो फिर एक बार से लिया गया है । भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के वीरों को अंग्रेजों के विरूद्ध प्रोत्साहित करते हुए कहा गया है कि वीरों के अधिकार हनन का कोई साहस नहीं कर सकता ।

व्याख्या:- कवि स्वाधीनता आंदोलन के सेनानियों से आह्वान करते हुए कहता है कि हे भारतवासी ! जो बकरियों के समान कायर होते हैं,वे अपने अधिकार छिनते देख विरोध नहीं करते,परिणामतः जीवनपर्यंत आंसू बहाते हैं। डार्विन से पूर्व भारत में श्री कृष्ण ने गीता में अन्याय के विरूद्ध शस्त्र उठाने की प्रेरणा दी थी क्योंकि समर्थ ही जीवित रहने का अधिकारी है ।

विशेष:-भाषा तत्सम शब्द प्रधान शब्दावली से युक्त,मुक्त छंद और ओज गुण सम्पन्न ।